प्रभात मत

न्याय में हो रही देरी से उठते सवाल

अकसर कहा जाता है कि न्याय में देरी न्याय से इनकार के समान है. व्यवस्था के कोण से सोचें तो न्याय में जितनी देर होगी, अपराध उतनी देर तक अदंडित रहेगा, जो एक अर्थ में अराजकता की स्थिति का सूचक है. आरोपित व्यक्ति के कोण से देखें तो न्याय में देरी उसे हासिल अधिकारों का एक सीमा तक स्थगन है. देश में लाखों विचाराधीन कैदियों को दोष सिद्ध होने या नहीं होने के इंतजार में ही जीवन के कई अमूल्य वर्ष जेल में काटने पड़ते हैं. न्याय में देरी विधि-व्यवस्था के लिए कितनी जटिल स्थिति पैदा कर सकती है, इसका एक अनुमान लाल किले पर हमले के दोषी लश्कर आतंकी मोहम्मद आरिफ उर्फ अशफाक की फांसी की सजा पर सुप्रीम कोर्ट के स्थगन आदेश से लगाया जा सकता है. करीब 13 साल पहले दिसंबर, 2000 में लाल किले पर आतंकी हमला हुआ था. इसमें आरिफ का दोष ट्रायल कोर्ट, दिल्ली हाइकोर्ट (2007) और सुप्रीम कोर्ट (2011) में सिद्ध हो चुका है. परंतु, प्रक्रियागत कारणों से आरिफ को फांसी अब तक नहीं दी जा सकी. इसी नुक्ते पर आरिफ के वकील ने फिर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और तर्क दिया कि संविधान के अनुसार किसी एक अपराध के लिए दोषी को दो दफे सजा नहीं दी जा सकती. आरिफ फांसी की सजा से पहले करीब 13 साल की कैद काट चुका है और यह अवधि स्वयं में आजीवन कैद की अवधि के लगभग बराबर है, इसलिए उसे आजीवन कैद में रखने के बाद फांसी नहीं दी जा सकती. इस दलील पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और दिल्ली सरकार से जवाब मांगा है. आरिफ के मामले में अंतिम फैसला चाहे जो भी हो, परंतु इससे फांसी की सजा के औचित्य, उससे जुड़ी लंबी न्यायिक-प्रक्रिया और अपराध के अन्य मामलों में न्याय में देरी का सवाल प्रमुखता से उठा है. विधि मंत्रालय के एक नोट के आधार पर 'नेशनल सोशल वॉच' नामक संस्था ने बीते दिसंबर में कहा था कि भारत की जेलों में तीन लाख विचाराधीन कैदी हैं, जिनमें दो लाख कई सालों से अंतिम फैसले के इंतजार में कैद हैं. उम्मीद की जानी चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट के मौजूदा आदेश के बाद फांसी की सजा से जुड़ी प्रक्रिया और विचाराधीन कैदियों की स्थिति पर नये सिरे से ध्यान दिया जायेगा और कुछ कारगर कदम उठाये जायेंगे.

बिहार में 'एम-वाइ समीकरण' पर नजर

संजय कुमार
डायरेक्टर, सीएसडीएस
sanjay@csds.in

पिछले तीन चुनावों में राजद के खराब प्रदर्शन की बड़ी वजह थी मुसलिम मतदाताओं का इससे छिटकना. नयी परिस्थितियां इशारा कर रही हैं कि बिहार में मुसलिम-यादव (एम-वाइ) मतदाता फिर एकजुट होकर नतीजों को प्रभावित कर सकते हैं.

करीब डेढ़ दशक पहले (1990 में), जब भाजपा नेता लाल कृष्ण आडवाणी अपनी प्रसिद्ध देशव्यापी रथयात्रा पर निकले थे, लग रहा था कि उनके उभार को कोई रोक नहीं पायेगा, लेकिन बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद ने सीतामढ़ी में उनकी रथयात्रा पर ब्रेक लगा दी थी. 2014 में भी, जब अन्य पार्टियां इस चिंता में डूबी दिख रही हैं कि आम चुनाव में मोदी लहर को कैसे रोका जाये, लग रहा है कि लालू प्रसाद मजबूती से उभर सकते हैं और कम-से-कम बिहार में इस लहर पर ब्रेक लगा सकते हैं. बिहार के बीते कुछ हफ्तों के राजनीतिक घटनाक्रम पर गौर करें, किशनगंज से जदयू उम्मीदवार अख्तरुल इमाम के मतदान से महज कुछ दिन पहले मैदान से हटने के बाद मुसलिम मतों के राजद-कांग्रेस-राकांपा गंठबंधन के पक्ष में एकजुट होने के संकेत मिल रहे हैं. कम-से-कम किशनगंज में तो यही उम्मीद जतायी जा रही है कि मुसलिम मतदाता एकजुट होकर मौजूदा सांसद एवं कांग्रेस प्रत्याशी मोहम्मद असरारुल हक के पक्ष में मतदान कर सकते हैं. इससे किशनगंज में भाजपा की मुश्किलें बढ़ गयी हैं. हालांकि भाजपा-लोजपा गंठबंधन की असली चिंता इस बात को लेकर है कि किशनगंज में जदयू प्रत्याशी के मैदान से हटने और राजद-कांग्रेस-राकांपा के पक्ष में मुसलमानों के एकजुट होने का निकले संदेश उन संसदीय क्षेत्रों में भी मुसलिम मतदाताओं के रुझान को प्रभावित कर सकते हैं, जहां मुसलिम मतदाता अच्छी-खासी संख्या में हैं. 2009 के लोकसभा चुनाव में जदयू के साथ गंठबंधन के कारण भाजपा ने उन संसदीय क्षेत्रों में भी अच्छा प्रदर्शन किया था, जहां मुसलिम मतदाता काफी संख्या में हैं. जाहिर है, मुसलिम मतों के भाजपा से दूर होने और राजद-कांग्रेस-राकांपा के पक्ष में एकजुट होने से भाजपा को बड़ा झटका लग सकता है.

बिहार में कुल मतों में मुसलिम मतदाताओं की हिस्सेदारी करीब 17 फीसदी है, पर कुछ क्षेत्रों में सिमटे होने और ज्यादातर चुनावों में किसी एक पार्टी के पक्ष में एकजुट होकर वोट देने के कारण ये राज्य के कुछ संसदीय क्षेत्रों में नतीजे को प्रभावित करते रहे हैं. मसलन, किशनगंज, अररिया व कटिहार संसदीय क्षेत्रों में मुसलिम मतदाताओं की मौजूदगी 35 फीसदी से अधिक हैं. कई अन्य क्षेत्रों में मुसलिम मतदाताओं की संख्या कुल मतदाताओं के 20 से 35 फीसदी के बीच हैं. जैसे- पश्चिम चंपारण, मधुबनी, पूर्णिया, दरभंगा, सीवान, सीतामढ़ी और भागलपुर.

कुछ अन्य क्षेत्रों, जैसे- वाल्मीकि नगर, शिवहर, सुपौल, मुजफ्फरपुर, वैशाली, गोपालगंज, बेगूसराय और सीतामढ़ी में कुल मतों में मुसलिम मतदाताओं की हिस्सेदारी करीब 15-16 फीसदी है. राज्य के उन दस संसदीय क्षेत्रों में, जहां मुसलिम मतदाता 20 फीसदी से अधिक हैं, पिछले आम चुनाव में जदयू-भाजपा गंठबंधन को 8 सीटें मिली थीं. दो अन्य सीटों में किशनगंज से कांग्रेस के मोहम्मद असरारुल हक विजयी रहे थे, जबकि सीवान में निर्दलीय ओमप्रकाश यादव को कामयाबी मिली थी. मुसलिम बहुल क्षेत्रों में जदयू-भाजपा की बड़ी कामयाबी की बड़ी वजह थी मुसलिम मतों का राजद और कांग्रेस में विभाजित होना. 2009 में दोनों दलों का गंठबंधन नहीं हुआ था. 2009 से पहले के कुछ चुनावों के आंकड़े बताते हैं कि राज्य में मुसलमानों ने राजद के पक्ष में बड़ी संख्या में मतदान किया था, लेकिन 2009 के लोकसभा चुनाव के दौरान मुसलिम मतदाताओं के केवल 30 फीसदी वोट ही राजद के खाते में गये थे, जिससे तब राजद-लोजपा गंठबंधन को बड़ा झटका लगा था.

2014 के आम चुनाव में इस बात को लेकर भले अलग-अलग कयास लगाये जा रहे हैं कि बिहार में किस पार्टी या गंठबंधन के खाते में कितनी सीटें जाएंगी, पर ज्यादातर का अनुमान यही है कि नीतीश कुमार को सबसे ज्यादा नुकसान हो सकता है, जबकि लालू प्रसाद सबसे ज्यादा फायदे में रह सकते हैं. नीतीश कुमार पिछले सात साल से जदयू-भाजपा गंठबंधन सरकार के मुखिया रहे और राज्य में 1996 से ही दोनों दलों ने साथ मिल कर लोकसभा चुनाव लड़ा था. नीतीश कुमार उम्मीद कर रहे थे कि भाजपा से गंठबंधन टूटने के बाद मुसलिम मतदाताओं का उनकी पार्टी के पक्ष में ध्रुवीकरण होगा. उनके इस सोच का मुख्य कारण यह था कि उनकी सरकार ने मुसलमानों, खास कर पसमांदा मुसलमानों, के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत की है. लेकिन विभिन्न इलाकों से मिल रहे संकेत यही इशारा करते हैं कि ज्यादातर मुसलिम मतदाता राजद-कांग्रेस गंठबंधन के पक्ष में एकजुट हो रहे हैं.

लालू प्रसाद के लिए खुश होने के कई कारण हैं. 2009 के आम चुनाव में राजद-लोजपा गंठबंधन की बड़ी पराजय के बाद उन्होंने मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए शायद ही कोई बड़ा कदम उठाया है. हाल में चारा घोटाले में वे जेल की सलाखों के पीछे भी जा चुके हैं. इसके बावजूद कांग्रेस के साथ गंठबंधन होने से राजद और कांग्रेस, दोनों को चुनावी लाभ की उम्मीद की जा रही है. जदयू से गंठबंधन टूटने के बाद भाजपा के पक्ष में मुसलिम मतों के ध्रुवीकरण की उम्मीद किसी को नहीं है. अब जबकि किशनगंज में जदयू उम्मीदवार के मैदान से हटने के बाद मुसलिम मतदाताओं का रुझान राजद-कांग्रेस गंठबंधन की ओर बढ़ा है, नयी परिस्थिति में यादव मतदाताओं का रुझान भी राजद-कांग्रेस की ओर बढ़ता दिख रहा है. इस साल के शुरू में हुए सर्वे से संकेत मिल रहे थे कि राज्य के ज्यादातर यादव मतदाता भाजपा-लोजपा गंठबंधन को वोट दे सकते हैं. तब भाजपा की ओर से नंद किशोर यादव को बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में पेश करने का यादव मतदाताओं पर सकारात्मक असर दिख रहा था, लेकिन पिछले कुछ सप्ताह के दौरान परिस्थितियां बदलती दिख रही हैं. पिछले कुछ चुनावों के दौरान राजद के पक्ष में एकजुट होकर मतदान करनेवाले यादव मतदाताओं का रुझान फिर राजद-कांग्रेस गंठबंधन के पक्ष में दिख रहा है.

1990 के दौर में, जब राजद का उभार चरम पर था, राज्य के 75 फीसदी से अधिक यादव मतदाताओं ने लालू प्रसाद के पक्ष में मतदान किया था. राजद के बुरे दौर, यानी 2005 और 2010 के विधानसभा चुनावों और 2009 के आम चुनाव, में भी 60 फीसदी से अधिक यादव मतदाताओं ने राजद के पक्ष में वोट दिया था. इन तीन चुनावों में राजद के खराब प्रदर्शन की बड़ी वजह थी मुसलिम मतदाताओं का इससे छिटकना. राज्य में यादव वोटर करीब 17 फीसदी है. नयी परिस्थितियां इशारा कर रही हैं कि बिहार में मुसलिम-यादव (एम-वाइ) मतदाता फिर एकजुट होकर नतीजों को प्रभावित कर सकते हैं. यदि यह मुमकिन हुआ, तो भाजपा-लोजपा गंठबंधन को बड़ा झटका लगना तय है.

बिजली संकट से कैसे मिले निजात

झारखंड में प्रचंड गर्मी के बीच बिजली संकट शुरू हो गया है. तेनुघाट ट्रांसमिशन लाइन व तेनुघाट-पतरातू ट्रांसमिशन लाइन की खस्ताहाली से अक्सर बिजली सप्लाई प्रभावित होती रहती है. इनदिनों राज्य के विभिन्न हिस्सों में जम कर लोड शेडिंग हो रही है. इससे पेयजल संकट की स्थिति भी उत्पन्न हो गयी है. लोड शेडिंग का सिलसिला बदस्तूर जारी है. हर आधे-एक घंटे पर बिजली की आंख-मिचौली का क्रम देखा जा सकता है. कई शहरों में दो से चार घंटे तक की लोडशेडिंग हो रही है. पिछले दिनों बिहारशरीफ-तेनुघाट ट्रांसमिशन लाइन बिहार की ओर ब्रेकडाउन कर गयी. वही तेनुघाट-पीटीपीएस ट्रांसमिशन लाइन में भी तेनुघाट के स्विच यार्ड में खराबी आ गयी. इससे तेनुघाट की दोनों इकाइयों से उत्पादन ठप हो गया. तेनुघाट से बिजली उत्पादन ठप होने से करीब 400 मेगावाट बिजली की कमी हो गयी. इसके बाद से जो बिजली सप्लाई की व्यवस्था चरमरायी वह अब भी जारी है. राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में तो दिन-दिनभर बिजली गुल रह रही है. बिजली उत्पादन में राज्य को आत्मनिर्भर होने में पता नहीं अभी कितने साल लगेंगे. यही वजह है कि झारखंड में औद्योगिक निवेश दूसरे नवगठित राज्यों के मुकाबले काफी कम है. लघु और कुटीर उद्योग भी प्रभावित हो रहे हैं. किसान बिजली पर निर्भर नहीं रह सकते. विडंबना देखिए कि झारखंड बनने के 13 वर्षों के दौरान नौ सरकारें बदली. सभी सरकारों ने कुछ ही माह के अंदर बिजली की स्थिति में सुधार का दावा किया. लेकिन यह दावा सिर्फ दावा ही साबित हुआ. बिजली के मामले में राज्य को आज भी संकट झेलना पड़ रहा है. राज्य की जनता को आज भी इंतजार है ऐसी किसी महात्वाकांक्षी योजना की जो राज्य को बिजली संकट से उबारे. सरकारें तो आती-जाती रहेंगी. वह चाहे किसी भी पार्टी या गंठबंधन की हों. असल मुद्दा तो यह है कि सरकारें आखिर जनहित के कामों या परियोजनाओं को कितना महत्व देती हैं. सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोग कितने दूरदर्शी हैं. उन्हें जनकल्याणकारी कामों की कितनी फिक्र या समझ है. यह बात सभी को समझना होगा कि बिजली-पानी दैनिक जीवन की मूलभुत आधार संरचना है. इसके बिना मानवीय जीवन स्तर सुधारने की बात सिर्फ बेमानी या छलावा ही है. उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार जनता के इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान अवश्य देगी.

वैशाख की सांझ बहुत उदास होती है

चिखुरी

चंचल
सामाजिक कार्यकर्ता
samtaghar@gmail.com

अचानक आसना चिखुरी को पकड़ कर रोने लगी. चिखुरी भी फुक्का मार कर रोने लगे. हर आंख रोने लगी. चिखुरी ने कहा- घबरा मत बिटिया! हम उसे आने नहीं देंगे. यह मुल्क गांधी का है, कसाई का नहीं...

आसना अपने ननिहाल आयी है. बहुत सुंदर है, पर उदास. चुन्नी लाल क लड़िका उसे गौर से देखता रहता है. उसका मन करता है, आसना के दुपट्टे को लेकर उसमें अपना मुंह छुपा ले. आंख बंद करके बैठा रहे. वह दौड़ कर गया और आसना के दुपट्टे में अपना मुंह छिपा लिया. आसना ने बस इतना ही समझा कि उसका दुपट्टा वहां से खिसक गया है, जहां के लिए वह बना है. उसने चुन्नी के लड़के को जोर से झटका और वह छटक कर महताब की बाहों में आ गया. महताब ने जोर की आवाज दी- पकड़ लिया. चुन्नी का बेटा 'चोर' हो गया. बाकी बच्चे जोर की ताली बजाने लगे. चुन्नी के बेटे को गुस्सा आ गया आसना पर. तरेर कर देखा और बोला- काली.... आसना की आंख डबडबा आयी. वह चुपचाप रोती, खड़ी रही.

चुन्नी बो सब देख रही थीं, क्योंकि वह दरवाजे पर बैठी चावल पसर रही थीं. सूप बगल रख के चुन्नी बो दौड़ीं और अपने बेटे को मारने लगीं- तैं बहुत गोर अहे. फूल अस बिटिया के काली कहबे? लड़के का मुंह झन्ना गया. आसना ने देखा कि हाथ फिर दुबारा उठ रहा है, वह दौड़ कर लड़के से चिपट गयी और उसे छिपा लिया- बच्चे को ऐसे मारते हैं मामी? चुन्नी बो ने अपने आंचल से आसना के आंसू पोछे और माफी मांगी- माफ करना बिटिया, अबोध है, काली कह दिया. आसना मुस्कुरा उठी- नहीं मामी! यह सब अचानक हुआ, तो हम घबरा गये, बस! काली तो हूं ही, इसके कहने से क्यों बुरा मानूंगी. क्यों फुदुक्कू! मेरा प्यारा भाई. फुदुक्कू का चेहरा खिल गया और वह बच्चों को पकड़ने भागा.

दोपहर की गर्मी और पछुआ हवा सम्मी के ओसारे तक आते-आते मखमली हो जाती है. माटी की लिपायी की महक से भरा ओसार बहुत राहत देता है. आसना और ताजो की दोपहरी यहीं कटती है. ताजो आसना के मामा सम्मी की बेटी है. आसना से छोटी है, मगर दोनों में गाढ़ी जमती है. दोनों एक ही चारपाई पर लेटी हैं. ताजो ने पूछा-एक बात बता दीदी- फुदुक्कुआ ने तुम्हें काली कहा, बुरा लगा न? नहीं रे. लड़िका के बात का क्या बुरा मानना. पर ताजो जिद करने लगी. आसना की आंख भर आयी-नहीं रे! बहुत दिन बाद किसी ने काली कहा. वह भी जब हमें प्यार करता, तो काली ही कहता था. उसका गला भर आया और वह ताजो से चिपट गयी. रोती रही. ताजो ने फिर कुरेदा- उसने तुम्हें छोड़ दिया? वह मत पूछ ताजो. उसे जिंदा बेकरी की भट्ठी में डाल दिया. हम चीख भी नहीं पाये. फूस के ढेर में दुबके हुए हमने सब देखा. रात-रात भर नींद नहीं आती... और दोनों की दोपहरी बेकरी कांड में गुजर गयी.

वैशाख की सांझ बहुत उदास होती है. इत्ता बड़ा दिन काटे नहीं कटता. दोपहरी काट कर लोग बाजार आ जाते हैं सौदा-सुल्फी कम, हालचाल लेने ज्यादा. चिखुरी चौराहे से होते हुए उमर दरजी के पास आये हैं. एक खादी की बंदी ऐसी सिलो मियां की असाढ़-सावन तक चली जाये. और जदि उसके आगे चले तो? चिखुरी की बात पर कयूम ने टुकड़ा लगाया. चिखुरी ने जवाब दिया-तो समझो मियां की सावन बीतने के पहले सिलाई नकद. उमर ने उंगली से हिसाब लगाया. चार महीने? ई चार महीने हम हवा खाब? पूरी महफिल जुट गयी. कयूम उठे घर में से एक मौनी गुड़ लेकर आये. एक जजमान दे गया रहा. दानेदार गुड़ अहै भाई. जनता गुड़ का स्वाद लेने लगी.

अपने-अपने दुपट्टे में दुबकी ताजो और आसना को देख नवल उपाधिया ने पूछा- ई दुसरकी लड़की के हाव चचा? ई सम्मी क भांजी हाव. बड़ी दुखी है बेचारी. या खुदा ऐसी तकलीफ किसी को मत देना... चिखुरी को याद आया. इसका गुजरात में बड़ा लंबा चौड़ा कारोबार रहा. ताजो! हियां आव त. ताजो इधर बढ़ आयी. आसना नीम की छांव में दूसरी तरफ मुंह कर के खड़ी रह गयी. चिखुरी ने जोर से आवाज दिया- उसे भी लेते आ बेटा. हमारी नातिन है जरा देख तो लें. इधर आने के लिए जब आसना मुड़ी तो कई आंखें नम हो गयीं.

यह गांव आसना का ननिहाल है. यहां हर कोइ आसना से जुड़ा है- मामा, नाना, नानी... यही तो गांव की रूह है. आसना आकार खड़ी हो गयी. चिखुरी ने अपने पास बुलाया. जिस तखत पर बैठे थे, उसके बगल जगह बनाया- आओ बेटा इधर आओ. आसना झिझकी. उसकी झिझक को कयूम ने तोड़ा- शरमा मत बेटा! ये चिखुरी काका हैं, तुम्हारे नाना लगेंगे. आसना जाकर बैठ गयी. चिखुरी का दाहिना हाथ आसना के कंधे पर गया. वे दूसरी तरफ देख रहे हैं और उनकी आंख से पानी गिर रहा है. सन्नाटा है. अचानक आसना चिखुरी को पकड़ रोने लगी. चिखुरी भी फुक्का मार कर रोने लगे. हर आंख रोने लगी. आसमान सब देख रहा था. सूरज बस्वारी में जा छिपा. चिखुरी ने कहा- घबरा मत बिटिया! हम उसे आने नहीं देंगे. यह मुल्क गांधी का है, कसाई का नहीं... नवल उपाधिया जाते-जाते बोले- वैशाख की सांझ बहुत उदास होती है...

सुभाषित

गोभिः पशुभिरश्वैश्च कृष्या च सुसमृद्धया।
कुलानि न प्ररोहंति यानि हीनानि वृत्ततः।।
- अर्थात्
जो कुल सदाचार से हीन हैं, वे गौवों, पशुओं, घोड़ों तथा हरी-भरी खेती से संपन्न होने पर भी उन्नति नहीं कर पाते.

सुख-दुख से अप्रभावित आत्मा

जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश का आश्रय लेकर मनुष्य अपनी क्रिया में प्रवृत्त होते हैं, वैसे ही चैतन्य आत्मा का आश्रय लेकर शरीर, इंद्रियां, मन, बुद्धि आदि अपने-अपने व्यापार में प्रवृत्त होते हैं. पृथ्वी पर जीवन का स्त्रोत सूर्य है, उसी के कारण इस पृथ्वी पर वनस्पति से लेकर मनुष्य तक के जीवन की सभी गतिविधियां चलती हैं, इनके लिए न तो सूर्य कोई आदेश ही देता है न प्रेरणा, किंतु उसके बिना भी सृष्टि का कार्य नहीं चल सकता. उसके आश्रय से ही चलता है. उसके

बोधि वृक्ष

कारण मनुष्य को सुख-दुख आदि होता है, जिसका प्रभाव भी उस पर नहीं होता. इसी प्रकार मनुष्य का शरीर, इंद्रियां, मन, बुद्धि आदि के व्यापार का कारण वह आत्मचेतना है, जिससे ये जड़ पदार्थ चैतन्य होकर अपने-अपने कार्यों में प्रवृत्त होते हैं. इसमें चेतनाशक्ति इनको अपना कार्य करने की शक्ति मात्र देती है. वह इनको न कार्य करने का आदेश देती है, न इनके कार्यों से होनेवाले सुख-दुख की भागीदार ही होती है. विद्युत से यंत्र चलते हैं किंतु वह उन्हें चलाती नहीं. यंत्र खराब होने पर यदि वे कार्य नहीं करते तो इसमें विद्युत का कोई दोष नहीं है. यंत्र ठीक होने पर ही विद्युत अपना कार्य करती रहती है. इसी प्रकार की आत्मा की चेतन शक्ति है. जिस प्रकार बिना विद्युत के यंत्र कार्य करना बंद कर देते हैं, उसी प्रकार बिना आत्मा की चेतन शक्ति के यह शरीर रूपी यंत्र निर्जीव हो जाता है. सूर्य की ही भांति यह आत्मा शरीर के सुख-दुख आदि से अप्रभावित रहती, क्यों आत्मा जड़ नहीं चेतन तत्व है.

■ आदि शंकराचार्य

कुछ अलग

फ्रांसिस फुकुयामा के नाम एक चिट्ठी

फ्रांसिस फुकुयामा जी,

मेरे आसपास कुछ ऐसा घटित हो रहा है जिसकी वजह से आज मैं आपको चिट्ठी लिखने पर मजबूर हुआ हूं. आपसे पहला परिचय सन 1989 में हुआ. परिचय कहना बड़ा हल्का लग रहा है, आप तो बौद्धिक जगत में किसी बम की तरह आकर गिरे और फटे थे. हर तरफ आपके राजनीतिक निबंध 'इतिहास के अंत?' की चर्चा थी. हमने बिना देरी किये आपको अमेरिकी पूंजीवाद का एजेंट करार दे दिया था. क्योंकि, आप जिस 'उदार लोकतंत्र' को मनुष्यता की अंतिम मंजिल बता रहे थे, उसे हम पूंजीवादी शोषण के सजावटी मुखौटे के रूप में देख रहे थे. आप जिस 'उदार लोकतंत्र' पर पूरी दुनिया में 'सर्वसम्मति' बता रहे थे, हम उससे असहमत थे. यहां हमें उदार शब्द का इस्तेमाल भाषा के साथ जबरदस्ती की तरह लगा था. यह ऐसी 'उदारता' थी जो मेहनतकशों के खून-पसीने पर पूंजीपतियों व उनके दलालों को अय्याशी की छूट देती थी. लेकिन आपकी एक बात से हम सहमत थे और अब भी हैं कि नया इतिहास बनने-बिगड़ने के लिए 'असहमति' जरूरी है. असहमतियों के टकराव से ही इतिहास आगे बढ़ता है. 'सर्वसम्मति' तो इतिहास का अंत लेकर आती है. अभी हमारे देश में जो आम चुनाव चल रहा है, उसमें गजब की सर्वसम्मति दिख रही है. हर पार्टी का एक ही नारा दिख रहा है- 'विकास'. विचाराधाराओं का स्थान 'विकास' ने ले लिया है. 'हवन करेंगे... हवन करेंगे' की तर्ज पर हर पार्टी कह रही है- 'विकास करेंगे... विकास करेंगे'. लेकिन, 'विकास किसका और कैसे?'- यह सवाल पूछते ही 'इतना सन्नाटा क्यों है भाई!' वाली तसवीर सामने आती है. केवल वामपंथियों को यह 'विकास' नहीं भा रहा है. वे 'विकास' में कॉरपोरेट लूट देख रहे हैं. लेकिन सर्वसम्मति के नक्कारखाने में उनकी असहमति तूती के समान है जो सुनायी नहीं दे रही. इस चुनाव की शुरुआत में इतिहास की खूब खुदाई हुई. नेहरू, पटेल, आंबेडकर सब बाहर निकाले गये. लेकिन ये किसी काम के नहीं पाये गये और इस पर सर्वसम्मति बन गयी कि देश के इतिहास को अब नरेंद्र मोदी से ही शुरू माना जाये. 2002 वाले मोदी से नहीं, 2014 वाले मोदी से. अब बनारस उर्फ काशी उर्फ वाराणसी को ही ले लीजिए. इस शहर का हजारों साल पुराना इतिहास है. लेकिन इसके इतिहास का भी अंत हो गया है. मोदी के यहां से परचा भरते ही बनारसी ऐसे हुलस पड़े मानो इससे पहले उनका कोई वजूद ही न रहा हो. अब मोदी से पहचान मिलने की आस लगाये बैठे हैं. बनारसी साड़ी और यहां तक कि गंगा मइया भी मोदी में ही पहचान तलाशती दिख रही हैं. तो फुकुयामा जी, हमारे यहां जो हो रहा है वह 'उदार लोकतंत्र' लायेगा या फासीवाद, यह तो पता नहीं, पर इतिहास का अंत वाली आपकी बात फिलहाल सही साबित हो रही है.

-आपका एक संशयग्रस्त आलोचक

सत्य प्रकाश चौधरी
प्रभात खबर, रांची
satyajournalist@gmail.com

ज्ञान ग्राफिक्स

पूंजी निवेश से भारतीय आइटी इंडस्ट्री में तेजी

भारत के टेक्नोलॉजी उद्योग ने अपने उत्पादों के जरिये बड़ी तेजी से अपने पांव देश-दुनिया में फैलाया है. यही वजह है कि नयी आइटी कंपनियां भी खड़ी हुईं और इस क्षेत्र में बाहर से पूंजी का निवेश भी हुआ. 2008 से 2013 के बीच पांच वर्षों में भारतीय टेक्नोलॉजी उद्योग के विकास पर एक नजर.

2.2 बिलियन
अमेरिकी डॉलर राजस्व प्राप्त किया सॉफ्टवेयर उत्पादों से भारतीय आइटी इंडस्ट्री ने साल 2013 में, जबकि 2008 में यह आंकड़ा 1.2 बिलियन था.

500
से ज्यादा सॉफ्टवेयर उत्पाद तैयार किये भारतीय आइटी इंडस्ट्री ने साल 2013 में.

65 प्रतिशत पूंजी निवेश रहा सिर्फ सॉफ्टवेयर, इंटरनेट और मोबाइल उद्योग में भारतीय आइटी इंडस्ट्री में हुए कुल पूंजी निवेश में से 2013 में.

स्रोत : नैसकॉम

108 बिलियन
अमेरिकी डॉलर राजस्व अर्जित करने के साथ कोच्चि, अहमदाबाद और कोलकाता जैसे द्वितीय और तृतीय श्रेणी के आइटी शहर साबित करते हैं कि भारत में आइटी इंडस्ट्री अभी और आगे जायेगी. उल्लेखनीय है कि बेंगलुरू इस मामले में पहले स्थान पर है.

32
नयी सॉफ्टवेयर कंपनियां शुरू हुईं और बाहरी निवेशकों ने भी निवेश किया साल 2013 में.

एक प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार को बचकानी बातों से इतर लोकतंत्र की गरिमा का ख्याल रखना चाहिए.

प्रियंका गांधी, पुत्री, सोनिया गांधी

सोनिया जी ने वाराणसी में और मोदी जी ने रायबरेली में चुनावी रैली नहीं की. क्या यह कांग्रेस-भाजपा की सांठ-गांठ नहीं?

अरविंद केजरीवाल, संयोजक, आप

पाठक मत

भारत की छवि बिगाड़ते हमारे नेता

हमारे अधिकांश नेता खुद को युवाओं का मार्गदर्शक बताते हैं. बड़े-बड़े दावे करनेवाले नेता खुद को देश का उत्तराधिकारी मान बैठते हैं, लेकिन उनकी वास्तविकता जनता के सामने तब आती है, जब वे मंच पर खड़े होते हैं. आरोप-प्रत्यारोप का दौर तो सदा से चलता आ रहा है, लेकिन हमें लगता है कि पहले लोग शिष्टाचार का पालन करते थे. आज किसी पर व्यक्तिगत लांछन लगाने से लोग जरा भी नहीं हिचकते. इसका असर आम जनता पर उनके खिलाफ ही पड़ता है. चुनाव में ज्यादा से ज्यादा लोगों को आकर्षित करने के लिए नेता एक-दूसरे की टांग चाहे जितनी क्यों न खींच लें, लेकिन जनता का दिल तो वही जीतेगा जो सबसे लायक होगा. भोली-भाली जनता अपने नेता की हर कारस्तानी याद रखती है. अगर नेता ही शिष्टाचार का पालन नहीं करेंगे, तो जनता को कैसे प्रेरित करेंगे.

सैयद इमरान, मोरहाबादी, रांची

दिनोंदिन बढ़ता मोदी का कद

जब से भाजपा ने नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया, यूपीए-2 की सरकार के समक्ष राजनीतिक संकट खड़ा हो गया. ऐसा कांग्रेस के नेताओं द्वारा तब से लेकर अब तक लगातार उनके विरोध में बयानबाजी से जाहिर हो रहा है. एक राज्य के मुख्यमंत्री के पद से ऊपर उठ कर राष्ट्रीय नेता के रूप में नरेंद्र मोदी का उदय निश्चित रूप से उनकी बढ़ती लोकप्रियता का द्योतक है. नरेंद्र मोदी के वाक्-कौशल से यह परिलक्षित होता है कि उनमें देश का नेतृत्व करने की क्षमता है. मोदी की लोकप्रियता से खार खायी कांग्रेस उन्हें केंद्र की सत्ता तक पहुंचने से रोकने के लिए अपने तरकश का हर तीर चला रही है. कांग्रेस नेता नरेंद्र मोदी पर लगातार तीखे प्रहार कर रहे हैं, इससे जनता के बीच उनका कद बढ़ता ही जा रहा है. अब देखना है कि इस चुनावी समर में मोदी का सिक्का कितना जमता है.

सुबोध मुखर्जी, जमशेदपुर

देश को दिग्भ्रमित करती मीडिया

खास पत्र

16वीं लोकसभा के लिए देश में चल रही इस चुनावी जंग में प्रभात खबर में केवल अभिमत स्तंभ में जितने आलेख छपे, वो आम अवाम के पक्ष में आये. सत्ता वर्ग को बेनकाब करते हुए. उसकी असली मंशा को भांपते हुए. इस बार प्रत्यक्ष रूप में कंपनी सत्ता सामने आयेगी, इस अंदाज में ये आलेख आ रहे हैं. बाकी इस बार के चुनाव में मीडिया का कॉरपोरेटीकरण कॉरपोरेट की मीडिया का नंगा रूप भी सामने आया. किसे कितनी सीटें मिलेंगी, कौन जीत रहा है, यह सब कुछ मीडिया वालों ने जैसे पहले ही तय कर दिया है. प्री पोल एनालिसिस और एग्जिट पोल के भौंडेपन पर चुनाव आयोग रोक क्यों नहीं लगाता? कांग्रेस और भाजपा को ही विकल्प के रूप में पेश करना, हर चुनाव में मीडिया की इस मानसिकता को इस देश की जनता वर्षों से ढो रही थी. क्या हो गया आम अवाम को? क्या अब भी राजनीतिक समझ से परे है इस देश की जनता? इस देश की मीडिया जनता के लिए नहीं है. तो ऐसी मीडिया को सरकार क्यों प्रोत्साहित कर रही है? जनता को दिग्भ्रमित करनेवालों को तो खदेड़ देना चाहिए. आजादी के बाद इस 2014 में चरम नंगापन देखने को मिला. आम लोगों के बीच में इन्हें शर्म भी नहीं आती. ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि चौथे स्तंभ की मर्यादा का आज की हाइटेक मीडिया ने सत्यानाश कर दिया है. इन मीडियावालों के भ्रम में पड़ कर अगर जनता ने कंपनी सत्ता को चुन लिया तो ये कंपनियां गांवों से लोगों को खदेड़ेंगी. जल, जंगल, जमीन, पर्वत-घाटी सहित सब कुछ इन्हीं के कब्जे में होगा. लोग गांव-घरों से बेघर हो जायेंगे. तब ऐसी खुशी में मीडियावाले डांस पार्टी आयोजित करना भूल न जायें, क्योंकि फासिज्म थोड़ा हंसते-मुस्कुराते हुए आये, बाद में तो रोना है ही.

कालेश्वर गोप, रामगढ़

लीजिए पुरस्कार पत्र-लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए हम सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखकों को पुरस्कृत करते हैं. आपके पत्रों का स्वागत है. पत्र में फोन नंबर भी दें.

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना इलाहाबाद

■ पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची- 834001
■ मेल करें : ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो, लिपि रोमन भी हो सकती है.
eletter@prabhatkhabar.in
■ फैक्स करें : 0651-2544006 पर

अतुलनीय भारत की यही है पहचान ?

आये दिन मीडिया में अतुलनीय भारत (इनक्रेडिबल इंडिया) के विज्ञापन देख कर भारतीय होने पर सहसा ही गर्व होता है. लेकिन जब भारत की सच्चाई से सामना होता है तो अपने देश का परिदृश्य कुछ और ही नजर आता है. अक्सर रिपोर्टों में यह बताया जाता है कि दुनिया की एक तिहाई गरीबी भारत में है. भ्रष्टाचार के मामले में हमारा देश दुनिया के अधिकांश देशों से आगे है. देश में बेरोजगारी का आलम भी उसी तरह है. यही नहीं, महिलाओं पर अत्याचार भी लगातार बढ़ रहे हैं. क्षेत्रवाद देश के लोगों को बांट रहा है. कानून व्यवस्था की स्थिति दयनीय है. अर्थव्यवस्था डांवांडोल है. राजनेता जनता का भरोसा लगातार तोड़ रहे हैं. उग्रवाद और आतंकवाद की समस्या भयावह रूप ले रही है. पड़ोसी देश हमें घेर रहे हैं और हम चुप्पी साधे बैठे हैं. आशा है, नयी सरकार इन सब से निजात दिलाये!

निखिल निशेष, निरसा, धनबाद

पर्यावरण से खिलवाड़ क्यों?

प्रकृति की गोद में ही मानव जिंदगी का अस्तित्व है. मशहूर वैज्ञानिक न्यूटन ने कहा था कि, हमें प्रकृति के साथ दोस्ताना संबंध बना कर प्रगति करनी चाहिए. यह बात आज देश के नीति-नियंताओं को समझनी होगी, तभी हम पर्यावरण के प्रति गंभीर हो सकते हैं. इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी यह है कि सरकारी व निजी संस्थाएं पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान चलायें. जिंदगी की पूरी परिकल्पना को प्रकृति और पर्यावरण की उपेक्षा खतरे में डाल सकती है. जिस तरह से आये दिन हम प्राकृतिक संसाधनों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, उसकी कीमत सबको चुकानी पड़ रही है. बेहतर यह होगा कि हम समय रहते चेत जायें और यथासंभव पर्यावरण की रक्षा करें, वरना वह दिन दूर नहीं जब प्रकृति हमें अपना उग्र रूप दिखायेगी और सब कुछ नष्ट हो जायेगा.

आशीष आनंद झा, दुमका